Downloaded from www.studiestoday.com

अपठित बोध

गद्यांश (10 अंक), काव्यांश (5 अंक)

निर्देश :-

1. दिए गए गद्यांश को पढ़कर मूल भाव समझने का प्रयास करें।
2. मूलभाव समझने के उपरान्त छात्र संभावित उत्तरों को रेखांकित करें।
3. सभी प्रश्नों के उत्तर दिए गए गद्यांश/पद्यांश पर आधारित हो।
4. छात्र प्रश्नों के उत्तर सामान्य, सरल भाषा में लिखें।
5. उत्तर का अनावश्यक विस्तार न करें।
6. काव्यांश के प्रश्नों का उत्तर कविता की पंक्तियों में न देकर छात्र सामान्य सरल भाषा में लिखें
7. गद्यांश का शीर्षक संक्षिप्त एवं सार्थक हो।

अभ्यास कार्य

क) मैं सड़क हूँ! अहिल्या जैसे मुनि के शाप से पाषाण हो गई थी, मैं भी वैसे ही मानो किसी के शाप से चिर-निद्रित बड़े भारी अजगर की तरह बन पर्वतों में होकर, पेड़ों की छाया के नीचे से, सुविस्तृत प्रान्तर के ऊपर से, देश-देशान्तर को वेष्टन करती हुई बहुत दिनों से जड़-निद्रा में सोई हुई हूँ। असीम धैर्य के साथ धूल में लोटकर शाप की अंतिम घड़ियों की प्रतीक्षा कर रही हूँ। मैं हमेशा से स्थिर हूँ, अचल हूँ, हमेशा से एक ही करवट से सो रही हूँ, किन्तु फिर भी मुझे एक घड़ी के लिए भी विश्राम नहीं, इतनी भी छुट्टी नहीं कि अपनी इस कठिन और सूखी सेज पर एक भी कोमल, स्निग्ध हरी घास उगा सकूँ। इतना भी समय नहीं कि अपने सिरहाने के पास बहुत छोटा-सा नीले रंग का एक वन-फूल खिला सकूँ। बोल नहीं सकती, पर अन्धे की तरह सभी कुछ अनुभव कर रही हूँ। रात और दिन पैरों की आहट, सिर्फ पैरों की आहट! मेरी इस जड़-निद्रा में हजारों-लाखों चरणों के शब्द दिन-रात दु:स्वप्न की तरह घूमते रहते हैं। मैं चरणों के स्पर्श से उनके हृदय को पढ़ सकती हूँ। मैं समझ जाती हूँ कौन घर जा रहा है, कौन काम पर जा रहा है, कौन आराम के लिए जा रहा है, कौन उत्सव में जा रहा है और कौन श्मशान को जा रहा है। जिसके सुख की गृहस्थी है, स्नेह की छाया है, वह कदम-कदम पर सुख की तस्वीर खींचता चलता है, हर कदम पर आशा के बीच बोता जाता है। जान पड़ता है जहाँ-जहाँ उसके पैर पड़े मानो वहां क्षण भर में ही एक-एक लता अंकुरित और पुष्पित हो उठेगी। जिसके घर नहीं, आश्रय नहीं, उसे पद-क्षेप में न आशा है, न अर्थ है। उसके कदम में न दायां है, न बायां है, उसके पैर बहते रहते हैं, मैं चलूं तो क्यों और ठहरूँ तो किस लिये? उसके पद-क्षेप से मेरी सूखी धूल मानो ओर सूख जाती है।

दुनिया की कोई भी कहानी मैं पूरी नहीं सुन पाती। आज सैकड़ों-हजारों वर्षों से मैं लाखों-करोड़ों लोगों की कितनी हँसी, कितने गाने, कितनी बातें सुनती आई हूँ, पर थोड़ी-सी सुन पाती हूँ। बाकी

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

को सुनने के लिए कान खड़े करती हूँ, तब देखती हूँ, वह आदमी ही अब नहीं रहा। ऐसी कितनी ही बरसों की कितनी टूटी-फूटी बातें, कितने बिखरे हुए गाने, मेरी धूल के साथ धूल बन गये हैं, मेरी धूल के साथ उड़ते रहते हैं, इसे क्या कोई जान सकता है। वह सुनो कोई गा रही है- ''कहूँ-कहूँ पर कह नहीं पाई।'' - अहा, जरा ठहरो, गाने को पूरा कर जाओ, पूरी बात सुन लूँ!

1. गद्यांश में 'मैं' किस के लिए प्रयुक्त हुआ है। और उसकी तुलना अहिल्या से क्यों की गई है? 2
2. चरणों के स्पर्श से सड़क क्या-क्या जान पाती है? 2
3. सड़क ने अपने स्वरूप के विषय में क्या कहा है? 2
4. सड़क दुनिया की कोई भी बात पूरी क्यों नहीं सुन पाती? 2
5. सड़क ने दु:स्वप्न किसे कहा है और क्यों? 2
6. 'असीम' तथा 'पुष्पित' शब्दों में से क्रमश: उपसर्ग-प्रत्यय अलग करें। 1
7. गद्यांश में आए ऐसे दो शब्द लिखिए जिनका अर्थ क्रमश: 'पत्थर' और 'सहारा' है? 1
8. सड़क के लिए प्रयुक्त कोई दो विशेषण लिखिए। 1
9. सड़क यात्री से क्या अनुरोध करती है? 1
10. गद्यांश का उचित शीर्षक दें। 1

ख) भाषा का भावना से गहरा सम्बन्ध है और भावना तथा विचार व्यक्तिव के आधार हैं। यदि हमारे भावों और विचारें को पोषक रस किसी विदेशी या पराई भाषा से मिलता है तो निश्चय ही हमारा व्यक्तिव भी भारतीय या स्वदेशी न होकर अभारतीय या विदेशी ही हो जाएगा। प्रत्येक भाषा और प्रत्येक साहित्य अपने देश-काल और धर्म से परिचित तथा विकसित होता है। उस पर अपने महापुरुषों और चिंतकों का उनकी अपनी परिस्थितियों के अनुसार ही प्रभाव पड़ता है। कोई दूसरा देश-काल और समाज भी उस सुंदर स्वास्थ्यकारी संस्कृति से प्रभावित हो, यह आवश्यक नहीं है। अतएव व्यक्ति के व्यक्तिव का समुचित विकास और उसकी शक्तियों को समुचित गति अपने ही पठन-पाठन में मिल सकती है। इसका कारण यह भी है कि मातृभाषा में जितनी सहज गति संभव है और इसमें जितनी कम-शक्ति-समय की आवश्यकता पड़ती है, उतनी किसी भी विदेशी या पराई भाषा में नहीं है।

यह भी सच है कि हमारे देश के प्रतिभाशाली और होनहार लोग पश्चिमी भाषा और साहित्य में अपनी क्षमता को देख कर स्वयं भी चकित रह जाते हैं, जिनकी वह अपनी मातृभाषा नहीं है। यह भी मानना पड़ेगा कि इन परिश्रमी लोगों ने अपनी जो शक्ति, समय और तन्मयता पराई भाषा के लिए खपाई, वह यदि मातृभाषा के लिए प्रयोग की गई होती तो एक अद्भुत चमत्कार ही हो गया होता। माइकेल मधुसूदन दत्त का दृष्टांत आपके सामने है। प्रतिभा के स्वामी इस बंगला कवि ने अंग्रेजी में

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

काव्य रचना करके कीर्ति और गौरव कमाने के लिए भी भारी परिश्रम और प्रयत्न किया। यह तथ्य उनको तब समझ में आया जब वे इंग्लैंड यात्रा के लिए गए। बहुत अच्छा लिखकर भी भी द्वितीय श्रेणी के लेखक और कवि से अधिक कुछ नहीं हो सके। यदि चाहते तो अपनी भाषा में कृत्तिव के बल पर वे सहज ही प्रथम श्रेणी के कवियों में प्रतिष्ठित हो सकते थे। यह सब पता चलने के बाद उन्होंने अपनी भाषा में लिखने का निर्णय किया। प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की क्या आवश्यकता है। श्रीमती सरोजनी नायडू यदि अपनी मातृभाषा में काव्य रचना करती तो निश्चय ही सर्वश्रेष्ठ कवयित्री होने का गौरव प्राप्त करती। मैं देखती हूं कि उच्च ज्ञान-विज्ञान का माध्यम अंग्रेजी होने पर भी पिछले डेढ़-सौ करोड़ लोगों में अंग्रेजी में एक भी रवीन्द्रनाथ, शरत्चंद्र, महावेदी वर्मा, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रनन्दन पंत और उमाशंकर जोशी आदि पैदा न कर सका। राष्ट्रभाषा उन्नति की द्योतक होती है।

1. भाषा का सम्बन्ध किससे होता है और कैसे? 2
2. व्यक्तित्व का समुचित विकास किस प्रकार होता है? 2
3. राष्ट्र की उन्नति किसमें निहित है? 2
4. कवि के अनुसार सरोजनी नायडू सर्वश्रेष्ठ कवयित्री क्यों नहीं बन पायीं? 2
5. माइकल मधुसूदन का दृष्टांत क्या सिखाता है? 2
6. लेखक ने ज्ञान-विज्ञान के लिए सर्वश्रेष्ठ भाषा किसे माना है? 2
7. 'कीर्ति' और उन्नति के विलोम शब्द लिखिए। 1
8. 'राष्ट्रीय' शब्द में से प्रत्यय अलग कर उससे दो नवीन शब्द बनाइए। 1
9. गद्यांश के लिए उचित शीर्षक लिखिए। 1

ग) सुचारित्र्य के दो सशक्त स्तंभ हैं- प्रथम सुसंस्कार और द्वितीय सत्संगति। सुसंस्कार भी पूर्व जीवन की सत्सगति व सत्कर्मों की अर्जित संपत्ति है और सत्संगति वर्तमान जीवन की दुर्लभ विभूति है। जिस प्रकार कुधातु की कठोरता और कालिख पारस के स्पर्श मात्र से कोमलता और कमनीयता में बदल जाती है, ठीक उसी प्रकार कुमार्गी का कालुष्य सत्संगति से स्वर्णिम आभा में परिवर्तित हो जाता है। सतत् सत्संगति से विचारों को नई दिशा मिलती है और अच्छे विचार मनुष्य को अच्छे कार्यों में प्रेरित करते हैं। परिणामतः सुचरित्र का निर्माण होता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है- ''महाकवि टैगोर के पास बैठने मात्र से ऐसा प्रतीत होता था मानो भीतर का देवता जाग गया हो।''

वस्तुतः चरित्र से ही जीवन की सार्थकता है। चरित्रवान, व्यक्ति समाज की शोभा है, शक्ति है। सुचारित्र्य से व्यक्ति ही नहीं, समाज भी सुवासित होता है और इस सुवास से राष्ट्र यशस्वी बनता है। विदुरजी की उक्ति अक्षरशः सत्य है कि सुचरित्र के बीच हमें भले ही वंश-परम्परा से प्राप्त हो सकते हैं पर चरित्र-निर्माण व्यक्ति के अपने बलबूते पर निर्भर है। अनुवांशिक परम्परा, परिवेश और परिस्थिति उसे केवल प्रेरणा दे सकते हैं पर उसका अर्जन नहीं कर सकते, वह व्यक्ति को उत्तराधिकार में प्राप्त नहीं होता।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

व्यक्ति-विशेष के शिथिल चरित्र होने से पूरे राष्ट्र पर चरित्र-संकट उपस्थित हो जाता है क्योंकि व्यक्ति पूरे राष्ट्र का एक घटक है। अनेक व्यक्तियों से मिलकर एक परिवार, अनेक परिवारों से एक कुल, अनेक कुलों से एक जाति या समाज और अनेकानेक जातियों और समाज-समुदायों से मिलकर ही एक राष्ट्र बनता है। आज जब लोग राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण की बात करते हैं, तब वे स्वयं उस राष्ट्र के एक आचरक घटक हैं- इस बात को विस्मृत कर देते हैं।

1. सत्संगति कुमार्गी को कैसे सुधारती है? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 2
2. चरित्र के बारे में विदुर के क्या विचार हैं? 2
3. व्यक्ति विशेष का चरित्र समूचे राष्ट्र को कैसे प्रभावित करता है? 2
4. व्यक्ति के चरित्र-निर्माण में किस-किस का योगदान होता है? 2
5. संगति के संदर्भ में पारस के उल्लेख से लेखक क्या प्रतिपादित करना चाहता है? 2
6. व्यक्ति सुसंस्कृत कैसे बनता है? स्पष्ट करें। 1
7. आचरण उच्च बनाने के लिए व्यक्ति को क्या प्रयास करना चाहिए? 1
8. उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1
9. गद्यांश में से कुसंगति और सुलभ के विलोम छाँटिए। 1
10. 'चरित्रवान' और परिवेश में से क्रमश प्रत्यय और उपसर्ग अलग करें। 1

घ) इस देश में किसी समय विद्या की जो धारा साधना के दुर्गम तुंग-श्रृंग से निर्झरित होती थी उस एक धारा ने संस्कृति के रूप में देश के समस्त स्तरों को अभिसिक्त किया है। इसके लिए उसे यांत्रिक नियम से शिक्षा विभाग का कारखाना नहीं खोलना पड़ा, शरीर में जैसे प्राण शक्ति की प्रेरणा से मोटी धमनियों की रक्तधारा छोटी-बड़ी नाना आयतनों की शिराओं के द्वारा समस्त अंग-प्रत्यगों में प्रवाहित होती रहती है, उसी तरह हमारे देश के सम्पूर्ण समाज-शरीर में एक ही शिक्षा स्वाभाविक प्राण क्रिया से निरन्तर संचारित हुई है। उसका नाड़ी रूप वाहन कोई स्थूल था तो कोई बहुत ही सूक्ष्म किन्तु फिर भी वे नाड़ियां एक कलेवर की ही थी और रक्त भी उसका अपना प्राण पूर्ण रक्त था।

अरण्य स्वयं जिस मिट्टी से प्राण ग्रहण करके जीवित है, उसी मिट्टी को वह खुद भी प्रतिदिन प्राणों का उपादान पर्याप्त रूप में देता है। उसे बराबर प्राणमय बनाये रखता है। ऊपर की डाली पर वह जो फल देता है, नीचे की मिट्टी में उसकी तैयारियाँ भी उसकी अपनी दी हुई हैं। अरण्य की मिट्टी इसीलिए आरण्यिक बनी रहती है, नहीं तो वह विजातीय मरुभूमि। जिस भूमि में वह उभिद-स्वाद परिव्याप्त नहीं है, वहां पेड़ पौधे शायद ही पैदा होते हो, और हो भी जाए तो वे उपवास के मारे टेढ़े-मेढ़े और मरे से हो जाते हैं। हमारे समाज की वन-भूमि में किसी जमाने में उच्चशीर्ष वनस्पति का दान नीचे की भूमि पर नित्य ही बरसा करता था। आज देश में पाश्चात्य शिक्षा जल रही है, भूमि को वह अपने उपादानों से उपजाऊ नहीं बना रहीं। जापान आदि देशों के साथ हमारा यही लज्जाजनक और दु:खप्रद भेद है। हमारे देश अपनी शिक्षा की भूमिका बनाने के विषय में उदासीन हैं। यहां देश की शिक्षा और देश का विशाल हृदय या मन एक दूसरे से विच्छिन्न हो। प्राचीन काल में हमारे देश के

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

बड़े-बड़े शास्त्रज्ञ विद्वानों के साथ निरक्षर ग्राम वासियों की मन प्रकृति का ऐसा परस्पर विरोध नहीं था। उस शास्त्रज्ञान के प्रति उसके मन में अनुकूल अभिमुखता तैयार हो गयी थी, उस भोज में उनका भी अर्द्ध भोजन था नित्य: और वह केवल प्राण से ही नहीं; बल्कि बचे हुए भाग के रूप में।

1. यांत्रिक नियम से कौन सा कारखाना नहीं खोलना पड़ा? 2
2. आज देश में कैसी शिक्षा चल रही है? 2
3. अरण्य के जीवित रह पाने का कारण क्या है? 1
4. निरक्षर शब्द में से उपसर्ग अलग कर उससे नवीन शब्द बनाइए। 1
5. गद्यांश का उचित शीर्षक दें। 1
6. शिक्षा के विषय में उदासीनता का क्या प्रभाव पड़ता है? 2
7. पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव बताइए। 2
8. अरण्य की विशेषता क्या है? 2
9. विद्या की धारा ने संस्कृति का रूप कैसे धारण किया? 2

www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

अपठित काव्यांश

अभ्यास कार्य

क) जिंदगी वहीं तक नहीं, ध्वजा
जिस जगह विगत युग ने गाड़ी,
मालूम किसी को नहीं अनागत
नर की सुविधाएँ सारी।
'सारा जीवन नप चुका' कहे जो,
वह दासता प्रचारक है।
नर के विवेक का शत्रु,
मनुज की मेधा का संहारक है।
जो कहे, सोच मत स्वयं,
बात जो कहूं, मानता चल उसको,
नर की स्वतंत्रता की मणि का,
तू कह आरति प्रबल उसको।
नर की स्वतंत्र चिन्तन से जो डरता,
कादर्प अविचारी है
बेड़ियाँ बुद्धि को जो देता
जुल्मी है, अत्याचारी है।

1. 'सारा जीवन नप चुका' से कवि का आशय क्या है? 1
2. मनुज की मेधा का संहारक कौन है? 1
3. कवि के अनुसार अत्याचारी और कायर कौन है? 1
4. अत्याचारी किसे कहा गया है? 1
5. बुद्धि को बेड़ियाँ देने का क्या आशय है? 1

ख) एक दिन पत्तियों ने भी कहा था,
डाल?
डाल में क्या है कमाल?
माना वह झूमी, झुकी, डोली है
ध्वनि-प्रधान दुनिया में
एक शब्द भी वह कभी बोली है?
लेकिन उसी हर-हर स्वर भरती है

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

मर्मर स्वर मर्मभरा भरती हैं,
नूतन हर वर्ष हुई,
पतझर में झर
बहार-फूट फिर छहरती हैं,
विथकित-चित्त पंथी का
शाप-ताप हरती हैं।
लेकिन हम अपने से खुले, खिले, फूले हैं-
रंग लिए, रस लिए, पराग लिए-
हमारी यश-गंध दूर-दूर-दूर फैली है,
भ्रमरों ने आकर हमारे गुन गाए हैं,
हम पर बौराए हैं।
सबकी सुन पाई है,
जड़ मुसकराई है!

1. कविता में पेड़ के विभिन्न अंग क्या कर रहें और क्यों? 1
2. फूल अपने आपको, डालों से, पत्तियों से श्रेष्ठ क्यों मानता है? 1
3. फूल, पत्ते, किस सत्य से अनभिज्ञ हैं? 1
4. जड़ की मुस्कान का रहस्य क्या है? 1
5. ''लेकिन हम हर-हर स्वर करती हैं'' इस पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार का नाम बताइए। 1

(ग) निर्मम कुम्हार की थापी से
कितने रूपों में कुटी-पिटी,
हर बार बिखेरी गई किंतु,
मिट्टी फिर भी तो नहीं मिटी
आशा में निश्छल पल जाए, छलना में पड़कर छल जाए,
सूरज दमके तो तब जाए, रजनी ठुमके तो ढल जाए,
यों तो बच्चों की गुड़िया-सी भोली मिट्टी की हस्ती क्या,
आंधी आए तो उड़ जाए, पानी बरसे तो गल जाए,
फसलें उगतीं, फसलें कटतीं, लेकिन धरती चिर उर्वर है।
सौ बार बने, सौ बार मिटे, लेकिन मिट्टी अविनश्वर है।
मिट्टी गल जाती पर उसका विश्वास अमर हो जाता है!
विरचे शिव, विष्णु, विरंचि विपुल
अगणित ब्रह्माण्ड दिखाए हैं,

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

पलने में प्रलय झुलाया है
गोदी में कल्प खिलाए हैं।
रो दे तो पतझर आ जाए, हंस दे तो मधुऋतु छा जाए,
झूमे तो नंदन झूम उठे, थिरके तो ताण्डव शरमाए,
यों मदिरालय के प्याले सी मिट्टी की मोहक मस्ती क्या,
अधरों को छूकर सकुचाए, ठोकर लग जाए छहराए।

1. कविता में कवि ने मिट्टी के किस स्वरूप पर प्रकाश डाला है? 1
2. मिट्टी की महिमा किसमें है और कैसे? 1
3. कुम्हार के लिए निर्मम शब्द का प्रयोग क्यों किया गया है? 1
4. ''विश्वास अमर हो जाता है''। का आशय स्पष्ट करें। 1
5. कविता में आए उपमा अलंकार अथवा मानवीकरण का उदाहरण छांटिए। 1

घ) इन दिनों छटपटा रहा है वह
अच्छा लगने वाली बातों के अलावा
और सब कुछ तो हो रहा है
इन दिनों वाले समय में
यह आखिरी तनाव
यह आखिरी पीड़ा
यह अंतिम कुंठा
यह अंतिम भूख
पर कहां?
चले जाते हैं सिलसिले
बढ़ी जाती है बेकरारी
गुजर जाते हैं दिन-पर-दिन
अनचीन्हें - से
भीड़ के विस्फोट में गुम होने से पहले
आएगा क्या, कोई, ऐसा दिन एक
उसका अपने वाला भी?
जिस दिन की सारी बातें
अथ से इति तक
अच्छी लगने वाली हों उसे
उस दिन भी उसका वैसे ही चले

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

वैसे ही चले दुनिया भी
लोग भी वही करें
रोटियाँ भी वैसे ही पकें
जैसा वह चाहे
जैसा वह कहे।

1. कवि की छटपटाहट का कारण क्या है? 1

2. कवि कैसे दिन की प्रतीक्षा में है? 1

3. 'अर्थ से इति तक' कवि का क्या अभिप्राय है? 1

4. कवि क्या चाहता है उसने अपना भाव किन पंक्तियों में व्यक्त किया है? 1

5. 'अच्छी लगनी वाली बातों के अलावा और सब कुछ तो हो रहा है।'' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट करें।
1

www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com